6/10

@

-: हैलमेट :-

NAME ALOK Singh
Branch CS
polytechnic college nowgong

-: प्रस्तावना :-

हैलमेट एक सुरक्षात्मक सामग्री का एक रूप है जो चोटों से सिर की रक्षा के लिए पहना जाता है। अधिक विशेष रूप से एक हैलमेट मानव मस्तिष्क की रक्षा करने में खोपड़ी की सहायता करता है। सुरक्षात्मक कार्य के अलावा प्रतीकात्मक हैलमेट कभी कभी उपयोग होता है।

-: वैदिककाल मे हेलमेट का इतिहास :-

हैलमेट का सबसे पुराना ज्ञात प्रयोग सुमेर सभ्यता मे 2500 ईसा पूर्व में दिखाई देता है। तब मोटी चमड़े या ऊन की टोपी पर ताम्र पत्र जोड़ कर हैलमेट पहनते थे और युद्ध मे तलवार से वार और तीर के हमले से बचाव करते थे। भारत मे 2600 ईसा पूर्व के वेदों में भी हैलमेट का उल्लेख है जहा उन्हे शिप्र कहा गया है। अब हैलमेट अक्सर हल्के प्लास्टिक सामग्री से बने होते है। ये व्यक्तिगत उदाहरण थे लेकिन बड़े पैमाने पर उत्पादित नही हुए थे। पहले बड़े पैमाने पर उत्पादित संस्करण 900 ईसा पूर्व के आसपास असीरियन सैनिकों द्वारा पहने जाते थे जो मुख्य रूप से कांस्य से बने होते है थे और पहनने वाले को तलवार के वार से सुरक्षित करने मे बड़ा मुख्य दान था

हैलमेट को हिन्दी में शिरस्त्राण कहते है।

-: वर्तमान काल मे हैलमेट का इतिहास :-

हैलमेट आमतौर पर सैन्य कर्मियों और कानून प्रवर्तन ACH एजेंसियों तक ही सीमित है। यदि आपको युद्ध के लिए हैलमेट की आवश्यकता है, तो आप संभवत: PAGSGT हैलमेट और ACH हैलमेट के बीच चयन करेंगे।

तो आप आपने वाहन की स्पीड को अधिक सावधानी से नियंत्रित कर सकते हैं इससे दुर्घटना की संभावना काफी हद तक कम हो जाती है.
यदि आप

-| क्या हेलमेट वास्तव में मदद करते हैं? |-

यदि आप किसी तरह अपने दोपहिया वाहन से गिर जाते है तो सिर और मस्तिष्क की चोटों को रोकने के लिए सुरक्षा गियर का उपयोग करना सबसे प्रभावी तरीका माना जाता है। एक मेटा - विश्लेषण से इन तथ्यों पर विचार करें जो साइकिल हेलमेट का उपयोग करते हुए पाए गए सिर की गंभीर चोटों को 60% तक कम कर देता है। दर्दनाक मस्तिष्क की चोट को 53% तक कम करता है।

-| हेलमेट पर BIS का महत्व |-

ब्यूरो ऑफ इंडियन स्टैंडर्ड (BIS) ने हाल ही में भारत के लिए नए हेलमेट लाने की घोषणा की है। इन नियमों से भारत में बिकने वाले हेलमेट लाने की घोषणा की है। इन नियमों से भारत में बिकने वाले हेलमेट की क्वालिटी के हेलमेट पर रोक लगाई जाएगी। भारत में इस नियम को 15 जनवरी 2019 से लागू किया जाएगा। जिसके बाद भारत में हेलमेट बनाने वाली कंपनियों को इसी स्टैंडर्ड पर हेलमेट की मैन्युफैक्चरिंग करनी होगी। नए नियम के अनुसार हेलमेट का वजन 1.2 किलोग्राम होगा जो अभी तक 1.5 किलोग्राम था। भारत में राष्ट्रीय मानक निर्धारित करने वाली संस्था है। यह उपभोक्ता मामलो, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण मंत्रालय के अधीन कार्य करती है। पहले नाम भारतीय मानक संस्थान (Indian standards Institution/ISI) था जिसकी स्थापना सन 17 Dec 1931 में हुई थी।

PAGE NO.:
DATE: / /

दोनो विकल्प हैंडगन और कम क्षमता वाली राइफलों सहित बैलिस्टिक के खिलाफ मध्यम सुरक्षा प्रदान करते है। प्रथम विश्व युद्ध मे तोपखाने की प्रभावशीलता और मारक क्षमता में पर्याप्त वृद्धि देखी गई, जिसके परिणामस्वरूप हेलमेट सहित सुरक्षात्मक उपकरणों पर नया ध्यान केंद्रित किया गया। इस संघर्ष के दौरान प्राथमिक खतरा छर्रे प्रक्षेप्य था, और 1915 में यूरोप में सुरक्षा के लिए स्टील से बने हेलमेट पेश किए गए थे।

-। हेलमेट के प्रकार ।-

फुल फेस हेलमेट फुल फेस हेलमेट राइडिंग के लिए सबसे सुरक्षित हेलमेट है। यह राइडर चेहरे और सिर को पूरी तरह को ढकता है और सबसे अधिक सुरक्षा प्रदान करता है। ये बारिश में भी राइडर की काफी मदद करते हैं।

हाफ फेस हेलमेट
मॉड्युलर हेलमेट
ड्यूल स्पोर्ट हेलमेट

-। हेलमेट क्यों आवश्यक है ।-

हेलमेट दुर्घटना के समय सिर में चोट लगने से बचाता है। अगर सभी लोग हेलमेट का प्रयोग करने लगेंगे तो उनकी जान की रक्षा होगी और सड़क हादसों में होने वाली मौतों मे भी कमी आ जाएगी।
हेलमेट वाहन का बेहतर नियंत्रण सुनिश्चित करता है यह देखा गया है कि हेलमेट पहनने से बाइक चलाते समय आपका ध्यान बेहतर हो जाता है. आप अपने टू व्हीलर को चलाते समय हेलमेट पहनते हैं,